सत्यम्-शिवम्-सुंदरम् का मर्म

हमेशा ये शब्द पूरे संसार में लोग अपने परमात्मा को उसके भावों को बताने के लिए एक शब्द का इस्तेमाल करते हैं कि वो ही सत्य है, वो ही शिवम है, वो ही सुन्दर है। लेकिन आज हम इसके भावार्थ को समझाते हैं...

सत्यम् का भाव- जो सत्य है वो शांत है। और सत्य चाहे वो व्यक्ति है, वस्तु है, चाहे संसार है, चाहे समाज है और चाहे परमात्मा है, अगर वो सत्य है तो शांत होगा और शाश्वत भी होगा। लेकिन कहा जाता है कि जो इन आँखों से दिखाई देता है चाहे व्यक्ति है, चाहे समाज है वो नश्वर है। ये नश्वरता सत्य है, ये भी हमको जानना आवश्यक है। सत्य का अर्थ हुआ कि "है और हमेशा है" उसके जानने के बाद क्या-क्या सत्य है, हमारा मन शांत हो जाता है। जब हम असत्य हैं, परेशान हैं, अशांत हैं, तो इसका अर्थ है हम सत्य नहीं, हम शांत नहीं। इसलिए सत्य की पहचान है प्रेम, शांति, और आनंद।

शिवम् का भाव- कहा जाता है जो हमारे साथ होता है वो कल्याणकारी ही है। लेकिन ये बात हमारे अन्दर बैठे कैसे? इसके लिए बहुत प्रयास की आवश्यकता है। इसलिए शिव का शाब्दिक अर्थ और भावार्थ कल्याणकारी के साथ जोड़ा जाता है। परमात्मा हमें सिखाते और कहते भी कि जो हमारे कर्म, जो हमारी सोच रही है उसी का परिणाम हमारे साथ चलता है। लेकिन वो कल्याणकारी ही है, उसमें कुछ राज़ है, कुछ रहस्य है वे जानने के बाद मन अशांत नहीं होगा। आराम से परिस्थितियों से बाहर निकल आता है। यही कल्याणकारी भाव हमेशा रहे, सदा रहे इसलिए सदा शिव भी कहते हैं परमात्मा को। जैसे वो सदा कल्याणकारी है ऐसे हम भी सदा कल्याणकारी रहें। कल्याणकारी सोच के साथ जीयें और भावों पर अमल करें।

सुन्दरम् का भाव- आपने छोटे बच्चों को देखा होगा वो सत्य है ना इसलिए सुन्दर लगते हैं। उनके अन्दर किसी के प्रति कोई भी दुर्भावना नहीं होती। उनको वैसे भी लोग परमात्मा का रूप कहते हैं, ईश्वर का रूप कहते हैं। इसका अर्थ क्या हुआ कि अगर हम निरन्तर सत्यता के साथ जीयें, कल्याणकारी भाव रखें, सबके बारे में शुभ सोचें, बोलें, भेदभाव से मुक्त रहें तो हम भी दिव्यता से सम्पन्न दिखेंगे। एक अलौकिक आभा हमारे ऊपर भी दिखाई देगी। क्योंकि हम सभी आत्माएं परमपिता परमात्मा की संतान हैं जैसे परमात्मा सत्य है, सुन्दर है, कल्याणकारी है वैसे हम भी होंगे। इस आध्यात्मिक जीवन यात्रा में इसको अपनाने मात्र से समाज में अमूल-चूल परिवर्तन आयेगा और लोगों के अन्दर भाव बदलेंगे।

अतः जीवन का सच्चा उद्देश्य है सत्य को जानना, शिव को पहचानना और सुन्दरता को अपनाना। यही आध्यात्मिक यात्रा है जो आत्मा को परमात्मा से जोड़ती है। जब हर आत्मा इस सत्य को स्वीकारेगी, तब ही पृथ्वी पर स्वर्णिम युग अर्थात् नई सृष्टि की स्थापना होगी। सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्- यही परमात्मा की सच्ची पहचान है और यही जीवन का परम उद्देश्य।

संसार विविधताओं का बहुरंगी रूप है। इसमें धर्म, भाषा, संस्कृति को देखना और उसका चिंतन करना एक सुन्दरता को इंगित करता है। जीवन एक सीधी रेखा नहीं है। उसमें विविधता है, उसमें एक रिदम है इसीलिए संसार सुन्दर है।

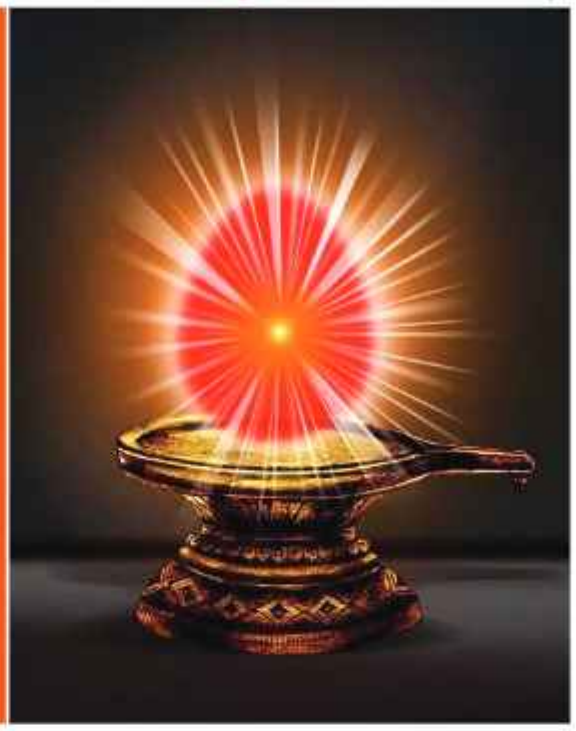

शास्त्र और पुराण भी कहते परमात्म अवतरण की बात

श्रीमद्भगवद् गीता से लेकर महाभारत शिवपुराण, रामायण, यजुर्वेद, मनोस्मृति सभी में कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है। किसी भी धर्म ग्रन्थ में परमात्मा के जन्म लेने की बात नहीं है। हर जगह प्रकट होने, अवतरण, परकाया प्रवेश की बात को ही इंगित किया गया है। क्योंकि परमात्मा का अपना कोई शरीर नहीं होता है। वह परकाया प्रवेश कर नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना का दिव्य कार्य कराते हैं। यहाँ तक कि शिव पुराण में स्पष्ट लिखा है कि ब्रह्मा के ललाट में प्रकट होऊंगा।

भारतीय आध्यात्मिक साहित्य पुराण, उपनिषद और गीता अनेक स्थानों पर यह संकेत देता है कि परमात्मा निराकार, अजन्मा और अविनाशी है। वे सृष्टि के चक्र में किसी मानव शरीर का जन्म नहीं लेते, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर परकाया प्रवेश अर्थात् किसी मनुष्य देह को माध्यम बनाकर अवतरित होते हैं। उनका आगमन देहधारी जन्म नहीं, बल्कि प्रकाश का अवतरण है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण का प्रसिद्ध वचन -

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत..." इस सत्य को गहराई से दर्शाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि ईश्वर बार-बार जन्म लेते हैं, बल्कि यह कि जब धर्म की हानि होती है तब ईश्वर प्रकाश मानव माध्यम में उतरकर धर्म की स्थापना करते हैं। गीता की भाषा में इसे अवतार कहा गया है, परंतु उसका मूल स्वरूप ज्ञान प्रकाश ही है।

परमात्मा ने श्रीमद्भगवद् गीता के 9वें अध्याय के 11वें श्लोक में कहा है कि अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं, तनुमाश्रितम्। परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्।। अर्थात् मनुष्य तन का आश्रय लेने वाले मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते हैं। यद्यपि मैं महेश्वर(परमात्मा) हूँ, तो भी व्यक्त भाव वाले मुझे नहीं पहचान सकते। मूढ़मति से तात्पर्य है कि जो परमात्मा के बताए सत्य ज्ञान को स्वीकार नहीं करते।

इस प्रकार शास्त्र और पुराण संकेत देते हैं कि परमात्मा का अवतरण निराकार ज्योति स्वरूप, परम प्रकाश और ज्ञान के अविर्भाव के रूप में होता है। उनका कार्य है - परिवर्तन, पवित्रीकरण और नई दिव्य दुनिया की स्थापना।

मैं साकार लोक में सत् धर्म की स्थापना करने आता हूँ... यदि भक्ति से भगवान मिलते तो फिर परमात्मा को यह बात क्यों कहनी पड़ती कि वत्स तू मन को मुझमें लगा...

मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते...

▶ रामायण में लिखा है कि बिनु पद चलइ, सुनइ बिनु काना। कर बिनु करम करइ बिधि नाना।। आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बक्ता बड़ जोगी(शिव के लिए)।। वह निराकार परमात्मा(ब्रह्मलोक निवासी) बिना पैर के चलता है, बिना कान के सुनता है, बिना हाथ के नाना प्रकार के काम करता है, फिर भी हज़ारों भुजा वाला है। बिना मुँह के सारे रसों का आनन्द लेता है और बिना वाणी के बहुत योग्य वक्ता है। वही हमारा परमात्मा राम है।

▶ मनोस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरम्भ में एक अंड प्रकट हुआ, जो हज़ारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था।

▶ महाभारत में लिखा है कि सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से अच्छादित थी तब एक अंडाकार ज्योति प्रकट हुई। और वह ज्योतिर्लिंग ही नये युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया। सभी वेद और शास्त्रों में कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है।

▶ शिव पुराण में कोटि रूद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है कि मैं ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट होऊंगा। समस्त संसार को दुःखों से मुक्त करने और नवयुग की आधारशीला रखने के लिए परमात्मा शिव ब्रह्मा जी के ललाट में प्रकट हुए। और उनका नाम रूद्र हुआ। यहाँ ललाट से तात्पर्य ज्ञान से है। परमपिता शिव परमात्मा ज्ञान का सागर है तो हम आत्माएं उनकी संतान ज्ञान स्वरूप हैं। ज्ञान को शक्ति भी कहा जाता है। जब परमात्मा ब्रह्मा जी के तन का आधार लेकर सच्चा गीता ज्ञान देते हैं। उस ज्ञान को धारण करने वालों में दिव्य परिवर्तन आता है और दैवी साम्राज्य की स्थापना होती है।

कहाँ है परमपिता परमात्मा का निवास स्थान

परमपिता परमात्मा निराकार, ज्योति बिंदु स्वरूप और सर्वश्रेष्ठ चेतन सत्ता हैं। वे जन्म-मरण के बंधन में नहीं आते और किसी भौतिक शरीर में निवास नहीं करते। उनके वास्तविक निवास स्थान को परमधाम, शांतिधाम या निर्वाणधाम कहा गया है। यह स्थान प्रकाश और शांति की पराकाष्ठा है। जहाँ समय, गति और परिवर्तन का प्रभाव नहीं। सभी आत्माएं भी मूल रूप से वहीं निवास करती हैं और सृष्टि चक्र के अंत में वहीं वापसी करती हैं। यही परमात्मा का अनादि, अविनाशी घर है।

सृष्टि को समझाने के लिए तीन लोकों का वर्णन आता है - परम लोक, सूक्ष्म लोक और साकार लोक।

परम लोक(परमधाम)- यह परमात्मा और आत्माओं का मूल वास, स्थान है। यहाँ केवल लाल सुवर्ण प्रकाश, पूर्ण शांति और निश्छलता है। न कोई शब्द, न शरीर, न गति - केवल ऊर्जा का शांत अस्तित्व। परमात्मा यहीं से कल्प-कल्प में सृष्टि चक्र को दिशा देते हैं।

सूक्ष्म लोक(सूक्ष्मधाम)- यह मध्य लोक है, जहाँ देह नहीं होती, परंतु विचार रूप शरीर होता है। इसे देवी-देवताओं का सब्टल प्लेन(सूक्ष्म तल) कहा जाता है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की स्थितियां भी इसी लोक में मानी जाती हैं। यहाँ दृश्य रूप होते हैं, परंतु भौतिकता नहीं होती।

साकार लोक(भौतिक जगत)- यह पृथ्वी वह आधारित जगत है जिसमें मनुष्य शरीर धारण करके कर्म करते हैं। यही कर्मभूमि है और इसी पर जन्म-मरण का चक्र चलता है। परमात्मा निराकार होते हुए भी सृष्टि चक्र के संधिकाल में मनुष्यों को ज्ञान देने आते हैं, परंतु उनका मूल निवास परम लोक ही है - शांति, प्रकाश और शक्ति का स्रोत।